



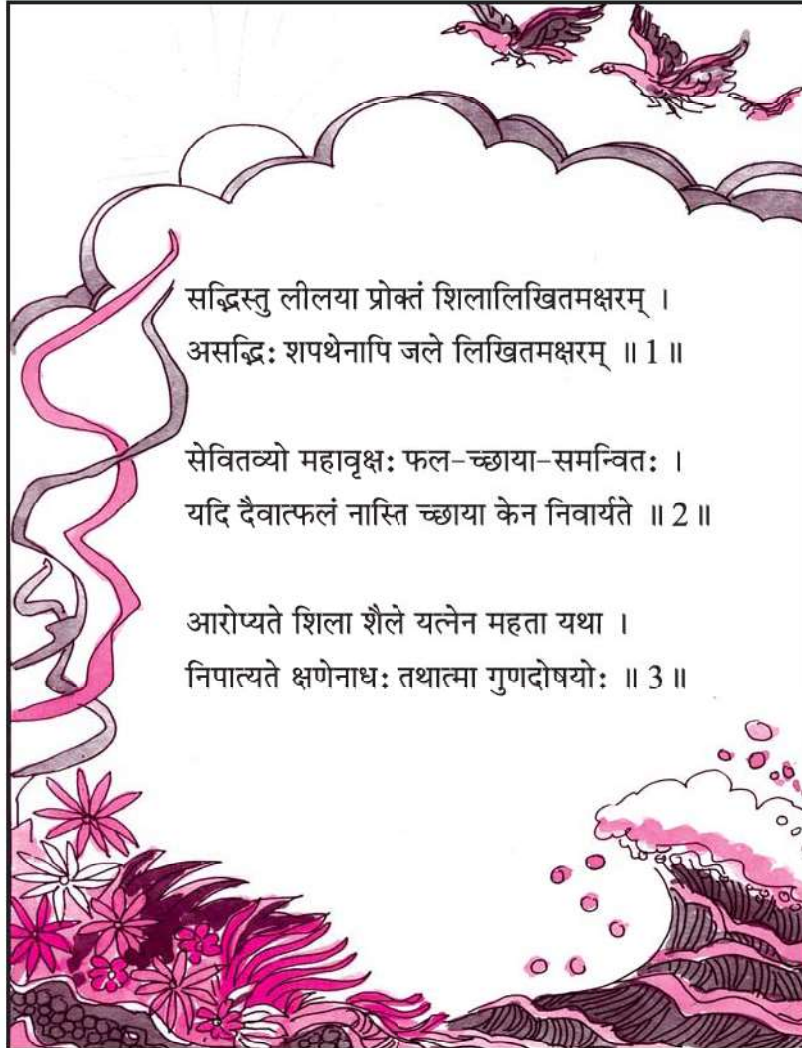
7. सुभाषितकुसुमानि



‘सुष्ठु भाषितं सुभाषितम्’ अर्थात् जो अच्छी तरह से कहा गया हो, वह सुभाषित है। संस्कृत साहित्य में इस प्रकार के सुभाषितों का कभी न समाप्त होने वाला खजाना है। साहित्यकारों का ऐसा मानना है कि ‘पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलम् अन्नं सुभाषितम्।’ अर्थात् पृथ्वी पर तीन रत्न हैं—जल, अन्न और सुभाषित। मानवजीवन के लिए जिस तरह जल और अन्न अनिवार्य हैं, ठीक उसी तरह सुभाषित भी अनिवार्य हैं।

संस्कृत साहित्य के ये सुभाषित मात्र भारतीय प्रजा या संस्कृति के लिए ही नहीं हैं अपितु समग्र मानव संस्कृति की पहचान कराते हैं। परिणामतः ये सुभाषित स्थान और समय के बंधनों से मुक्त हो कर मानव-मात्र के जीवन का दिशा निर्देश करते हैं। इनके माध्यम से कवि मानवजीवन में मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास करते हैं। व्यक्ति के चरित्रनिर्माण के लिए ये (सुभाषित) मित्र के समान सहायक बनते हैं। जीवन में ग्रहण करने योग्य बातों का अनुसरण करने से मानव को कैसे सुख और आनन्द की अनुभूति हो सकती है, उसके उत्तम उदाहरण भी इन सुभाषितों से प्राप्त होते हैं। गागर में सागर की विशेषता इन सुभाषितों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

प्रस्तुत पाठ में सात सुभाषितों का संग्रह है जिसमें सज्जनों के वचनों का मूल्य, वृक्षों की उपयोगिता, महापुरुषों के अनुकरणीय गुणों की प्राप्ति, अस्थिर चित्तवाले व्यक्तियों से होनेवाली हानि, व्यक्ति की परीक्षा की उपयोगिता, महापुरुषों के अनुकरणीय गुणों और धैर्यवान व्यक्तियों के स्वभाव का सुचारु वर्णन किया गया है। भविष्य के नागरिक और वर्तमान के विद्यार्थियों में जीवन मूल्य, सद्गुणों तथा जीवन-कौशल का सिंचन करने के उद्देश्य से इन सुभाषित कुसुमों को यहाँ प्रस्तुत किया गया है।



क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः ॥ 4 ॥

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते
निघर्षण-च्छेदन-ताप-ताडनैः ।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते
श्रुतेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥ 5 ॥
आपत्सु रामः समरेषु भीमः
दानेषु कर्णश्च नयेषु कृष्णः ।
भीष्मः प्रतिज्ञापरिपालनेषु
विक्रान्तकार्येषु भवाञ्जनेयः ॥ 6 ॥

प्रारम्भते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ 7 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) शपथः शपथ, सौगंध शैलः पर्वत प्रसादः कृपा, प्रसन्नता पुरुषः मनुष्य, मानव (संस्कृत में पुरुष शब्द का प्रयोग स्त्री और पुरुष-मानवमात्र के लिए किया जाता है। अतः यहाँ भी पुरुषः पद स्त्री और पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त किया गया है।) समरः युद्ध नयः नीति आञ्जनेयः अंजनि पुत्र, हनुमान

(स्त्रीलिङ्ग) लीला सरलता, सहजता छाया छाया शिला शिला, बड़ा पत्थर

(नपुंसकलिङ्ग) अक्षरम् वर्ण, अकार आदि - 'अ' इत्यादि अक्षर कनकम् सोना, सुवर्ण श्रुतम् ज्ञान शीलम् चरित्र

सर्वनाम : केन (पु.-नपुं.) किसके द्वारा, किससे

विशेषण : शिलालिखितम् (अक्षरम्) शिला पर लिखा हुआ (अक्षर) फलच्छायासमन्वितः (महावृक्षः) फल और छाया से युक्त (बड़ा वृक्ष)

अव्यय : अधः नीचे अद्यैव आज ही

समास : शिलालिखितम् (शिलायां लिखितम् - सप्तमी तत्पुरुष) । महावृक्षः (महान् चासौ वृक्षः - कर्मधारय) । फलच्छायासमन्वितः (फलम् च छाया च (-फलच्छाये, इतरेतर द्वन्द्व), फलच्छायाभ्याम् समन्वितः, तम् - तृतीया तत्पुरुष) । गुणदोषयोः (गुणः च दोषः च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व) । अव्यवस्थितचित्तस्य (व्यवस्थितं चित्तं यस्य सः - व्यवस्थितचित्तः - बहुव्रीहि), न व्यवस्थितचित्तः, तस्य - नञ् तत्पुरुष) । निघर्षणच्छेदनतापताडनैः, (निघर्षणं च छेदः च तापः च ताडनं च निघर्षणच्छेदनतापताडनानि, तैः इतरेतर द्वन्द्व) । विक्रान्तकार्येषु (विक्रान्तं च तत् कार्यम्, तेषु - कर्मधारय) । नीतिनिपुणाः (नीतिषु निपुणाः - सप्तमी तत्पुरुष) । विघ्नभयेन (विघ्नात् भयम्, तेन - पञ्चमी तत्पुरुष) । विघ्नविहताः (विघ्नैः विहताः - तृतीया तत्पुरुष) । उत्तमजनाः (उत्तमः च असौ जनः, ते - कर्मधारय) ।

कृदन्त : (क.भू.कृ.) प्रोक्तम् कहा हुआ, कहा गया लिखितम् लिखा हुआ रुष्टः क्रोध से भरा हुआ तुष्टः संतुष्ट, संतोष पाया हुआ (वि.कृ.) सेवितव्यः उपभोग करने लायक, सेवन करना चाहिए (सं.भू.कृ.) प्रारभ्य प्रारम्भ करके

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपद) वि + रम् (विरमति) विराम लेना, रुक जाना परि + त्यज् (परित्यजति) छोड़ना, त्याग करना

विशेष

1. शब्दार्थ : सद्भिः सज्जनों के द्वारा असद्भिः दुर्जनों के द्वारा फलच्छायासमन्वितः फल और छाया से युक्त केन निवार्यते कौन दूर कर सकता है ? कौन रोक सकता है ? आरोप्यते रखा जाता है, चढ़ाया जाता है यत्नेन महता खूब प्रयत्नपूर्वक क्षणेनाधः निपात्यते क्षण मात्र में नीचे गिरा दिया जाता है। तथात्मा गुणदोषयोः उसी तरह आत्मा गुण और दोष में (आत्मा को, अपने-आपको गुण में ऊपर उठने में कष्ट होता है किन्तु दोष में नीचे गिरने में समय नहीं लगता।) अव्यवस्थितचित्तस्य अव्यवस्थित चित्तवाले का, जिसका चित्त सुचारु रूप से काम नहीं करता ऐसे व्यक्ति का, चंचल चित्तवाले चतुर्भिः चार तरह से - रीति से, तरीके से परीक्ष्यते परीक्षा की जाती है, जाँच की जाती है निघर्षणच्छेदनतापताडनैः घिसना, छेदना-काटना, अग्नि में तपाना, ताड़ना-पीटना इन चार क्रियाओं के द्वारा कर्मणा कर्म से आपत्सु आपत्तियों में प्रतिज्ञापरिपालनेषु प्रतिज्ञा के पालन करने के काम में विक्रान्तकार्येषु पराक्रम से भरपूर कार्यों में भव हो, बने प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः नीच मनुष्यों के द्वारा विघ्नों के डर से आरम्भ नहीं किया जाता है। मध्याः मध्यम प्रकार के मनुष्य विघ्नैः प्रतिहन्यमानाः विघ्नों द्वारा आहत, विघ्नों का सामना करते

2. सन्धिः सद्भिस्तु (सद्भिः तु)। शपथेनापि (शपथेन अपि)। सेवितव्यो महावृक्षः (सेवितव्यः महावृक्षः)। नास्ति छाया (न अस्ति छाया)। क्षणेनाधः (क्षणेन अधः)। तथात्मा (तथा आत्मा)। प्रसादोऽपि (प्रसादः अपि)। कर्णश्च(कर्णः च)। भवाञ्जनेयः (भव आञ्जनेयः)। पुनरपि (पुनः अपि)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

- (1) सद्भिः लीलया प्रोक्तं कीदृशम् ? ☐
(क) अचलम् (ख) चलम् (ग) नश्वरम् (घ) असत्यम्
- (2) महता यत्नेन शिला कुत्र आरोप्यते ? ☐
(क) भूमौ (ख) नदीतटे (ग) शैले (घ) गृहे
- (3) अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादः कीदृशः ? ☐
(क) भयङ्करः (ख) दयनीयः (ग) अनुकरणीयः (घ) तुष्टिकरः
- (4) पुरुषः केन परीक्ष्यते ? ☐
(क) शीलेन (ख) धनेन (ग) पदेन (घ) कनकेन
- (5) कर्णः भव । ☐
(क) नयेषु (ख) दानेषु (ग) समरेषु (घ) आपत्सु
- (6) विक्रान्तकार्येषु भव । ☐
(क) भीमः (ख) भीष्मः (ग) आञ्जनेयः (घ) कृष्णः
- (7) कैः कार्यं न प्रारभ्यते ? ☐
(क) उत्तमजनैः (ख) नीचैः (ग) मध्यमैः (घ) जनैः

(8) के कार्य प्रारम्भ न परित्यजन्ति ?



(क) मध्यमजनाः (ख) नीचजनाः (ग) सामान्यजनाः (घ) उत्तमजनाः

2. एकेन वाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) कैः प्रोक्तं जले लिखितमक्षरं भवति ?
- (2) शिला कथं शैले आरोप्यते ?
- (3) गुणेन कः परीक्ष्यते ?
- (4) कार्यं प्रारम्भ के परित्यजन्ति ?

3. उदाहरणानुसारं शब्दरूपाणां परिचयं कारयत ।

उदाहरणम् : जले	जल	अकारान्त	नपुंसकलिङ्ग	सप्तमी	एकवचन
(1) लीलया
(2) समरेषु
(3) गुणदोषयोः
(4) ताडनैः

4. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) स्वर्ण की परीक्षा किस-किस तरह से की जाती है ?
- (2) आपत्ति में और प्रतिज्ञापालन में किसे आदर्श मानना चाहिए ? क्यों ?
- (3) कार्य प्रारम्भ न करने वाले व्यक्तियों को कैसा बताया गया है ?

5. मातृभाषायाम् अनुवादं कृत्वा अर्थ विस्तरत ।

- (1) यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते
निघर्षण-च्छेदन-ताप-ताडनैः ॥
- (2) सेवितव्यो महावृक्षः फल-च्छाया-समन्वितः ।
यदि दैवात्फलं नास्ति च्छाया केन निवार्यते ॥

6. श्लोकस्य पूर्तिं कुरुत ।

- (1) आपत्सु रामः भवाञ्जनेयः ॥

प्रवृत्ति

- संस्कृत भाषा में इस तरह के अन्य सुभाषितों का संग्रह कीजिए।
- दो-चार संस्कृत सुभाषितों को कंठस्थ कीजिए और उसका अर्थ समझिए।

